

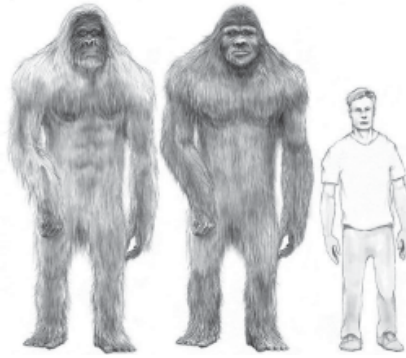
# विशाल वनमानुष का विलोप भोजन के कारण हुआ था

करीब 80 साल पहले मानव वैज्ञानिक गुस्ताव हाइनरिच रैल्फ फॉन कोनिग्सवाल्ड ने हांगकांग की एक दवा की दुकान से एक बड़ा सा दांत खोजा था। यह दांत दिखने में तो मनुष्य के दांत जैसा था मगर बहुत बड़ा था। फॉन कोनिग्सवाल्ड ने इसे एक जंतु का जीवाश्म माना था और इसे नाम दिया था *गायगेंटोपिथेकस*। यानी अति विशाल वनमानुष।

आगे चलकर दक्षिण एशिया में हजारों ऐसे विशाल दांत खोजे जा चुके हैं और तीन जबड़े भी मिल चुके हैं। इनके विश्लेषण से पता चलता है कि इनका मालिक कम से कम 3 मीटर ऊंचा रहा होगा। अर्थात् यह अब तक पाए गए वनमानुषों में सबसे बड़ा था। ऐसा प्रतीत होता है कि यह ओरांगुटान का करीबी था। मगर सवाल यह है कि यह विलुप्त क्यों हो गया।

अब चायनीज़ विज्ञान अकादमी की बेजिंग स्थित जैव विकास की प्रमुख प्रयोगशाला के यिंगकी ज़ेंग ने अपने अध्ययन के आधार पर यह अनुमान व्यक्त किया है कि संभवतः इसके विलोप का मुख्य कारण इसके भोजन में परिवर्तन था।

ज़ेंग ने हाल ही में खोजे गए गायगेंटोपिथेकस के 17 दांतों का विश्लेषण किया है। ये सारे दांत 4 लाख साल से कम पुराने हैं। यानी तब तक यह जीव धरती पर था।



ज़ेंग ने पाया कि इनमें से कई दांतों का क्षय हो चुका था। इसके आधार पर उन्होंने अनुमान लगाया कि शायद यह जीव दांतों की सड़न का शिकार हुआ था। आखिर क्यों? ज़ेंग का मत है कि इसका सम्बंध उसके भोजन से है। इस विशालकाय जीव का सामना जब बदलती जलवायु (घटते तापमान) से हुआ और इसका पसंदीदा भोजन चुकने लगा तो इसे

अपनी खुराक बदलनी पड़ी। ज़ेंग के मुताबिक *गायगेंटोपिथेकस* बांस जैसी वनस्पतियों पर निर्भर था जो लगातार कम हो रही थी। लिहाज़ा इसे ऐसे फल खाने पर मजबूर होना पड़ा जो उतने पौष्टिक नहीं थे और खाने पर अम्ल पैदा करते थे। कुल मिलाकर ज़ेंग के मुताबिक इस जीव को कम पौष्टिक भोजन खाना पड़ा और इससे उसकी ज़रूरतें पूरी नहीं होती थीं।

मगर उनके इस अनुमान पर अन्य जीव वैज्ञानिकों ने असहमति जताई है। जैसे मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट के कॉर्नेलियस कुज़िक का कहना है, “चिम्पैंज़ी भी तो ऐसे फल खाते हैं जो काफी कड़वे भी होते हैं और अम्लीय भी होते हैं। मगर उनके दांत तो नहीं सड़ते।” पुराजीव विज्ञान के साथ समस्या यही है। आपके पास प्रमाण पुख्ता नहीं होते। आपको उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर सोचे-समझे अनुमान लगाने होते हैं और उन्हें आज ज्ञात बातों के प्रकाश में जांचना होता है। (स्रोत फीचर्स)